

श्री

38

पालीचीकारिक

मः

हैं पुस्तक

पुणेपेठशानवार

पुरा

घेथें.

रावजीश्रीधरगोंध

याणी

21855

538

आपले

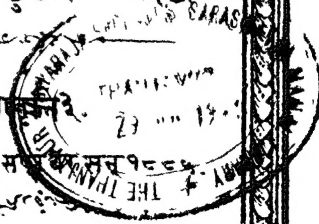
caraki

जगाधितेच्छु छाप

निछा

आपले

तारीरकरमाह सप



अथ अनुक्रमिका प्रारंभ

| श्लो | पुरुषाच्या शक्ति. | पृष्ठ | श्लो | पुरुषाच्या शक्ति. |
|------|-------------------|-------|------|--------------------|
| ३ | मस्तक-शोभा. | १ | " | वरचा ओंठ |
| " | उजवा गात्र | " | " | ओष्ठ संपुट. |
| " | डावा गात्र | " | " | जुबुन, कंठ. |
| " | नेत्राभ्यं. | " | " | कंठा बाहेर |
| ४ | केशाभ्यं आय. | २ | " | उजवा खांदी |
| " | टाळू. कपाळ | " | " | डावा खांदी |
| " | शुक्रुटी | " | " | उजवा हात. |
| ५ | शुक्रुटीचा मध्य. | " | " | उजवे मनगर |
| " | उजवा नेत्र. | " | १० | उजव्या हाताचे घुं. |
| " | डावा नेत्र. | " | " | बाहेर, नख |
| ६ | नाक. | " | " | हाताचा मध्य. |
| " | नाकाचे आय. | " | ११ | पाठ, कुक्षी, पोद. |
| " | उजवा कान. | " | " | हृदय. |
| " | डावा कान. | " | १२ | स्तन, रोगा. |
| ७ | गात्राचा मध्य. | ३ | " | डावा बाहू. |
| " | रवालचा ओंठ | " | " | उजवा बाहू. |

अनुक्रमणिका

(२)

| श्लो | पुरुषाच्या श-वि. | पृष्ठ | श्लो | पुरुषाच्या श-वि. | पृष्ठ |
|------|------------------|-------|------|------------------|-------|
| १३ | हाना हात. | ५ | २० | भासन. | ॥ |
| ॥ | डावे मनगर. | ॥ | २१ | डांडेष्टपत्र. | ॥ |
| ॥ | डावा हात पृष्ठ. | ॥ | २२ | गमन करितो | ॥ |
| ॥ | डावा हात बोरे. | ॥ | २३ | अंजांत. | ८ |
| ॥ | डावा हात नखें. | ॥ | ॥ | रिते पात्र. | ॥ |
| १४ | डावा हात, मध्य. | ॥ | २४ | अग्नीतः. | ॥ |
| ॥ | कांबर, नाभी. | ॥ | ॥ | देवळांत. | ॥ |
| ॥ | बस्ती. | ॥ | २५ | घराचा मध्य. | ॥ |
| १५ | गुह्य, मांड्या. | ॥ | ॥ | दोघांचा मध्य. | ॥ |
| ॥ | जंघन, गुद. | ॥ | ॥ | पालीचे युद्ध. | ॥ |
| १६ | गुडघे, घोंटे. | ६ | २६ | दिव्यांत. | ९ |
| ॥ | जंघा, पाय. | ॥ | २७ | वस्त्रालंकार. | ॥ |
| १७ | खुर, शिब, बोरे. | ॥ | २८ | आयुधें. | ॥ |
| ॥ | नखें. | ॥ | २९ | वाहन. | १० |
| १८ | नळवा. | ॥ | ३० | जन्म नक्षत्रादि. | ॥ |
| १९ | शयन. | ७ | ३१ | कुर्याग. | ॥ |

| श्लो | पुरुषांच्या श-वि. | पृष्ठ | श्लो | स्त्रियांच्या श-वि. | पृष्ठ |
|------|---------------------|-------|------|---------------------|-------|
| ३४ | सरडाचे प्रकार. | ११ | ५ | नाक. | ११ |
| ३८ | शांतीचामकार. | १२ | ११ | वरचा ओंठ. | ११ |
| ११ | स्त्रियांच्या श-वि. | ११ | ११ | रवालचा ओंठ. | ११ |
| | | | ११ | ओष्ठ संपुट. | ११ |
| १ | मस्तक. | १६ | ६ | बुबुक. | ११ |
| २ | टाळू. | ११ | ११ | तोंड. | ११ |
| ११ | वेणी. | ११ | ११ | कंठ. | ११ |
| ११ | केशांचे अग्र. | ११ | ११ | कारवा. | ११ |
| ३ | मान. | ११ | ७ | पाठ. | १८ |
| ११ | कपाळ. | ११ | ११ | कुशी. | ११ |
| ११ | उजवा गाल. | ११ | ११ | रवांदे, दंड. | ११ |
| ११ | डावा गाल. | ११ | ८ | उजवा हात. | ११ |
| ४ | उजवा कान. | १७ | ११ | डावा हात. | ११ |
| ११ | डावा कान. | ११ | ११ | उजवें मनगर. | ११ |
| ११ | उजवानेत्र. | ११ | ९ | डावें मनगर. | ११ |
| ११ | डावानेत्र. | ११ | ११ | हाताचा मध्य. | ११ |

अनुक्रमणिका

(४)

| श्लो | स्त्रियांच्या श-वि. | पृष्ठ | श्लो | स्त्रियांच्या श-वि. | पृष्ठ |
|------|---------------------|-------|------|---------------------|-------|
| ११ | हाताचें पृष्ठ. | ११ | २ | दिशा फळ. | २१ |
| ११ | बोटें, नखें. | ११ | २ | निधि फळ. | २२ |
| १० | स्तन, हृदय. | १९ | ११ | वार फळ. | ११ |
| ११ | कुक्षी. | १३ | १ | नक्षत्र फळ. | २३ |
| ११ | कन्येचें पोद. | ११ | १ | लग्न फळ. | २५ |
| ११ | पोद, भाभी. | ११ | १ | योग फळ. | २६ |
| ११ | गुह्य, कंबर | ११ | १ | करण फळ. | २७ |
| ११ | गुद. | ११ | | | |
| १२ | मांड्या. | ११ | | इतिपद्धी पतन | |
| ११ | गुडघे | ११ | | कारिकानुक्रम- | |
| ११ | जंघा. | ११ | | णिका समाप्त. | |
| ११ | घोटे | ११ | | | |
| १३ | उजवा पाय. | २० | | | |
| ११ | डावा पाय. | ११ | | | |
| ११ | पायांची बोटें | ११ | | | |
| ११ | पायांची नखें. | ११ | | | |

श्री पालिचीकारिकाप्रारंभ.

श्लोक

अथातः संप्रवक्ष्यामि फलं पल्याः प्रपातने
॥ यद्यदमेनृणां दृष्टं तत्तदेव विशेषतः ॥१॥
गर्ग वाराह मांडव्य नारदाद्यैर्यथोदितं ॥ त-
त्तत्कार्यविशेषेण ज्ञानव्यं सविचक्षणैः ॥
२॥ ७३॥ १॥

अर्थ:- मनुष्यांच्या आंगावर पाल पतन पावली अस-
तां विशेषें करून काय फळ आहे तें सांगतो ॥१॥
गर्ग, वाराह, मांडव्य, नारद इत्यादिक ऋषींनीं ज-
सें फळ सांगितलें आहे त्याप्रमाणें चतुर बकुशल
पुरुषांनीं समजावें तेंच आतां मी सांगतो. ॥२॥

शिरः शिरवायां सरव माननो निवास कपो-
ले प्रियदर्शनं स्यात् ॥ दक्षे कपोले प्रियसं-
दोस्य स्यात्केशबंधे पिच रोगबंधः ॥३॥

अर्थ:- मस्तकावर किंवा शेडीवर पाल पडली अस-
तां सरव प्राप्त होतें आणि डाव्या गालावर पडली अ-
सतां मित्राचें दर्शन होईल; असें जाणावें. उजव्या गालावर

पडली असतां इष्ट संपत्ती मिळते आणि केश बंधूचे
ठायीं पडली असतां रोगउखळ होतो. ॥३॥

केशांतो निघनं मोक्तं ब्रह्मरक्षणे मृतिमदं
॥ ललाटे ग्रियमानोति श्रुवोस्तु धनहानि
कुरु ॥४॥

अर्थ- केशाचे आघावर पडली असतां नाश जाणावा,
हाकूवर पडली असतां मरण जाणावें. कपाळावर
पडली असतां धनलाभ होतो. व भोंवईवर पडली
असतां द्रव्य नाश होतो. ४

धनलाभो श्रुवोर्मध्ये दक्षिणेनयने शशं
॥ वामे बंधनं माघांत व दक्षिणे मिष्टान्न भो.
जन ॥५॥

अर्थ- श्रुकुटीच्या मध्येच जर पतन पावली तर द्रव्य
लाभ जाणावा, उजव्या नेत्रावर पडली असतां शश
जाणावें, आणि डाव्या नेत्रावर पडली असतां बंधन आ-
प्त होतें, सुखावर पडली असतां मिष्टान्न भोजन मिळेल ५

नासिकायांच सौभाग्यं नासाग्रे व्यसनं भ-
वेत् ॥ लाभस्तु दक्षिणे कर्णे वामे कर्णे च दुः
खभाक् ॥६॥

अर्थ:- नाकावर पडली असतां सौभाग्य जाणावं, नाकाचे आघ्रावर पडल्यानें दुःख होईल. उजव्या कानावर पडली तर लाभ होतो. व वाम कर्णावर पडली तर दुःख होईल.

गंडप्रदेशयोर्मध्ये भोजनं परिकीर्तनं ॥ अ-

धरोष्ठे धनैश्चैव मूर्ध्निष्टे कलहो भवेत् ॥ ७ ॥

अर्थ:- गालाच्या मध्यभागीं जर पडली तर भोजन मिळेल असे सांगिल्लें आहे, रवाळच्या ओंठावर पडली तर द्रव्य ऐश्वर्य मिळेल, आणि वरच्या ओंठावर पडली असतां कलह होईल असें जाणावं. ७

संपुटे मृत्युमाप्नोति बुबुके राजविग्रहं ॥ स-

हृदागमनं कंठे बहिः कंठरिपोर्भयं ॥ ८ ॥

अर्थ:- ओष्ठ संपुटाचे ठायीं पडली असतां मरणांत पावतो, बुबुकावर (म्हणजे ओठाचे रवालीं हनुवटीचे वर) पडली असतां राजाबरोबर द्वेष घडेल असें जाणावं. कंठावर पडली असतां मित्राचें अगमन होईल, कंठाच्या बाहेर पडली असतां शत्रुभय प्राप्त होतें.

विजयं दक्षिणस्कंधे वामस्कंधे पराजयं ॥

अर्थ:- हानिः करे प्राक्ता मणिबंधे विभूषणं ॥ ९ ॥

अर्थ:- उजव्या खांद्यावर पडली असतां जय प्राप्त होतो, मा-
णि डाव्या खांद्यावर पडली असतां पराजय होतो, हस्ताव-
र पडली असतां द्रव्यनाश होतो, मनगटावर पडली असतां
अलंकार प्राप्त होतो. ९

करपृष्ठेर्यहानिः स्यादंगुलीषु मिथ्यागमः ॥ नखे

पुथनहानिः स्यात्करमध्ये महत्स्वरवं ॥ १० ॥

अर्थ:- हस्तान्च्या पृष्ठभागावर पडली असतां द्रव्यनाशच
जाणावा. बोटांवर पडली असतां इष्टवदार्थ्य माप्ती जाणा-
वी, नखांवर पडली नर द्रव्यनाश होतो, हस्ताचे मध्यभागीं
पडली असतां महत्स्वरव होईल. १०

पृष्ठे परोक्षवार्ता च पार्श्वयोर्बध्नुदर्शनं ॥ उदरे

धनसंप्राप्तिर्हृदि सौख्यविनर्धनं ॥ ११ ॥

अर्थ:- पाठीवर पाल पडली असतां आपल्या मित्राची
बानसी समजेल, दोन्ही कुक्षीवर पडली असतां बंधूची
भेट होईल. पोटावर पडली असतां द्रव्यलाभ होईल, हृ-
दयाचे ठायीं पडली असतां सौख्य वृद्धी होईल. ११

स्तनयुग्मे च सौभाग्यं कक्षयोर्ग्रीवसखाव-

हं ॥ वामे बाहौ बहुक्लेशो यशः स्यात्क्षत्रबाहुके १२

अर्थ:- पुरुषाच्या स्तन ह्यांचे ठायीं पाल पडली तर सौभा-

स्थे प्राप्त होतें उभय कारवेंच्याठावीं पतन पावली असतां
 स्त्रियांत सारव प्राप्त होतें, डाव्या हातवर पडली असतां
 बहुत क्लेश होतान. उजव्या हातवर पडली असतां यश-
 प्राप्ती होतें. १०

करेकलत्रकलहं मणिवंधे धनापहं ॥ करपृ-

ष्ठे चांगुलीषु भूषणं हाबिहूनस्वे ॥ १३ ॥

अर्थ:- डाव्या हातावर पडली असतां कुटुंबाचीं कलह
 होतो आणि डाव्या मनगरावर पतन पावली असतां द्र-
 व्यनाश होतो, डाव्या हाताच्या पृष्ठभागावर आणि बे-
 लावर पडली असतां भूषण प्राप्ती होईल, डाव्या हाताच्या
 नखावर पडली असतां नाश होईल. १३

करमध्ये धनप्राप्तिः कस्यां वस्त्रविभूषणं ॥

जयः कीर्तिर्भवेन्नाभौ बंधने व्याधिबंधनं १४

अर्थ:- डाव्या हाताच्या मध्यमाचीं पडली असतां धन
 प्राप्ती होईल. कंबरेवर पडली असतां वस्त्र व अलंकार
 प्राप्त होतील. नाभीवर पडली असतां जय आणि कीर्ति
 हीं प्राप्त होतील. बंधनाचे ठावीं (बस्तीवर) पडली अस-
 तां रोग प्राप्ती होईल. १४

गुह्यस्थाने मृतिर्ज्ञेया ऊर्ध्वे स्तवस्त्रहानिहन्

जंघनेधननाशाय गुदे रोग समागमः ॥१५॥
 अर्थः- गुदस्थानी पडली असतां मरण जाणावें आणि.
 मांड्यावर पडली असतां वस्त्रांचा नाश जाणावा,
 घनाचे ठायीं (म्हणजे कंबरेच्या पुढल्या बाजूवर) प-
 डली असतां द्रव्यनाश होतो, गुदस्थानी पडली अस-
 तां रोग प्राप्ती जाणावी. १५.

जान्वोस्तु बंधनं प्रोक्तं गुल्फयोस्त्रीविनाश-
 नं ॥ जंघयोर्गमनं प्रोक्तं पादयोर्बन्धनं तथा ॥१६॥
 अर्थः- दोनी गुदघ्यांवर पडली असतां बंधन प्राप्ति हो-
 ईल. घांठ्यांवर पडली असतां स्त्रीचा नाश जाणावा.
 जंघावर (म्हणजे दोनी गुदघ्यांच्या रवालीं पायां पर्यंत)
 पडली असतां प्रवास घडेल असें जाणावें, दोन्ही पायां-
 वर पडली असतां बंधन प्राप्ती जाणावी. १६.

खुरयोर्मृत्युमाप्नोति पादपृष्ठे स्तरवप्रदं ॥ पा-
 दांगुल्यां पुत्रनाशं पशुमृत्यान्मरेषु च ॥१७॥
 अर्थः- खुर (म्हणजे लक्षणे करून जोडलेले) पायांवर
 पडली असतां मृत्यु प्राप्ती, टांचेवर पडली असतां स्त-
 रव प्राप्ती, पायाचे बोटांवर पडली तर पुत्रनाश पायांचे
 नखांवर पडली असतां पशुच चाकर यांचा नाश १७

अर्थ:- घराच्या मध्यभागीं जर पडेल तर घरधऱ्याचा नाश होईल. दोघांच्या मध्यभागींच जर पडेल तर दोघांत जोड. नमत्याचा नाश जाणावा. पालीचे परस्पर युद्ध होत असतां जर खाली पडलेली पाहिली तर सर्व दुःखाचा नाश होईल आणि घरांत राहाणाऱ्या भाणसांस करव मासी जाणावी. २५.

यदि पल्याः प्रपातेन दीपो नाशयेते गृहे ॥ तद्-

हं नाशमायाति त्यजेन्मासत्रयंततः ॥ २६ ॥

अर्थ:- पालीच्या पडण्यानें जर घरांतील दिवा गेला तर ते धन नाश पावतें यास्तव तीन महिने पर्जन्या घरांत राहू नये. २६.

पल्याः प्रपतनं वस्त्रेषूषणे चैव दृश्यते ॥ मान

हानिर्भवेत्तस्य कलहो वा भविष्यति ॥ २७ ॥

अर्थ:- आपले वस्त्रे व अलंकार यांजवर जर पाल पडतांना दृष्टीस पडली तर आपले योग्यतेचा नाश किंवा कलह होईल असें जाणावे. २७.

आयुधेषु च दृश्येत यदि पल्याः प्रपातनं ॥ स्व-

हस्तयुद्धमाप्नोति शत्रुहानिस्तदा भवेत् ॥ २८ ॥

अर्थ:- तलवार इत्यादि आयुधांवर जर पाल पडली तर आपल्या हस्तें करून शत्रूशीं युद्ध होईल. आणि शत्रू

नाशपावेल. २८.

वाहनैः संप्रदृश्येन गमनं परिदूषितं ॥ २९ ॥

अर्थ:- आपलेजे अरबादिक वाहन यांचे ठायीं जर पाळ पडली तर कष्ट युक्त प्रताप होईल असें फळ आहे २९

अन्य दृशादिभेदेन फलभेदाभवेत्पूर्वं ॥ त्वज्ज

न्मदिवसे जन्मनक्षत्रेने धने विधौ ॥ ३० ॥

अर्थ:- आतां कोणत्या नक्षत्रावर व कोणत्या दिवशीं पाळ पडली असतां काय फळ हें सांगणें आपल्या जन्म दिवशीं किंवा जन्मनक्षत्र दिवशीं अथवा आपल्यास बा. रावा चंद्र असेल त्या दिवशीं ३०.

वैधृती च व्यतीपाते उत्पात ग्रहणादिषु ॥ यम-

घोरे मृत्युदग्धे दिने च कालनाडिके ॥ ३१ ॥

अर्थ:- वैधृती, व्यतीपात, उत्पात दिवस, ग्रहणादिक, यमघात, मृत्युयोग, दग्धयोग, काल नाडिका ३१.

विषनाड्यां चूरयुते लग्ने चूर निरीक्षिते ॥ का-

लेखे व विजानीया द्युक्तं न हि शोभनं ॥ ३२ ॥

अर्थ:- विषनाडी पापग्रहयुक्त व पापग्रहानें अवलोकित असेल, इत्यादिक काळीं जरी पाळ चांगल्या ठिकाणी पडली तरी तें फळ पूर्वी सांगितलें तें फळ न होतों वा-

इष्टफलमाप्त होईल. ३२.

दुर्निमित्तेन याजते निधनं जायते ध्रुवं ॥ इति-

पल्याः प्रपातनफलं ज्ञेयं निचक्षणैः ॥ ३३ ॥

अर्थ:- यावरीतीवरून दुर्निमित्त आणं अज्ञाना निश्चये करून नाश होतो असे जाणावे. या प्रकारे करून कुशल पुरुषांनी पालीच्या पडण्याचे फळ जाणावे. ३३

एतदेव फलं विद्यात्सर्गस्थ प्ररोहणं ॥ पल्याः

प्रपातनंचैव तत्सर्गस्थ प्ररोहणं ॥ ३४ ॥

अर्थ:- आणि हे पूर्वोक्त फल सर्गडा आगावर चढला असता जाणावे, पालीचे पडणे आणि सर्गडाचे प्ररोहण ३४

निधनार्थाय भवति शप्तमं विद्याद्विपर्यये ॥ पतना

नंतरं तस्य रोहणं यदि जायते, पतने फल मुक्त्वा

हं रोहणेन फलं भवेत् ॥ ३५ ॥

अर्थ:- ही दोन्ही नाशार्थ होनात. परंतु विपर्यय असतां शप्तम जाणावे. सर्गडा अंगावर पडून जर चढला तर पडण्याचे फळ उत्तम आणि नुसत्याच चढण्याचे फळ त्या पेक्षां कमी असे जाणावे. ३५.

आरोहणं चोर्ध्ववत्क्रमो वत्क्रानुपातनं ॥ प्र-

वेष्टादिच शीघ्रेण तत्फलं जायते ध्रुवं ॥ ३६ ॥

अर्थ:- आरोहण व पतनयांची लक्षणे सांगतो. तोंड वर करून जर अंगावर चढला तर त्याला आरोहण म्हणावे. आणि रवाली तोंड करून जर उतरला तर त्याला पतन म्हणावे. असे लक्षण युक्त सरड्याचे आरोहण व पतन जर झाले तर शीघ्र फळ प्राप्ती होईल. ३६

पत्न्याः स्पर्शनमात्रेण संचैलं स्नानमाचरे-

तु॥ पंचगव्यं तथा प्राश्य कुर्यादाज्या वस्त्राकनं ३७
अर्थ:- आता पुनः पालीविषयीं कंझी प्रकार सांगतो. पालीचा स्पर्श झाला असता लागलीच वस्त्रासह स्नान करावे आणि पंचगव्य प्राशन करून तुषामध्ये आपले मुख पाहवे. ३७.

अशक्तो वा मशक्तो वा यदिच्छेच्छुभमात्म-

नः ॥ पुण्याहं वाचयित्वा तु शान्तिकर्म समाचरेत् ३८
अर्थ:- अशक्त असो अथवा शक्तिमान असो ज्याला आपल्या कल्याणाची इच्छा आहे त्याने अथमनः अगोदर भसें करावे. नंतर पुण्याह वाचन करून शान्तिकर्म करून घ्यावे. ३८

प्रतिरूपं सुवर्णेन तदर्थेन च वा पुनः शान्तिमावे-

यथा शक्त्या विनशाख्यं न कुर्यात् ॥ ३९

अर्थ:- आता शांतीचा प्रकार सांगतो. त्याने सांगितले

पैल सुवर्णाची अथवा पांच पल सुवर्णाची पालीची प्रतिमा करावी. इतकें आपले सामर्थ्य नसेल तर यथाशक्ति विनशाढ्य न करितां सुवर्णाची प्रतिमा करावी. ३९.

रक्तवस्त्रेण संवेष्ट्य गंधपुष्पैः संपूजयन् ॥ त-
स्याग्रे मृन्मयं रम्यं कलशं जलपूरितं ॥ ४० ॥

अर्थ:- ती प्रतिमा तांबड्या वस्त्रानें वेष्टित करून नंतर गंध फुलांनीं त्रितिवें पूजन करावें. मग त्या प्रतिमेचा पुढें मृत्तिकेचा चांगला घट साण्योनें भरावा. ४०.

वस्त्रमाल्यै रलंकृत्य स्थापयेत्तंडुलोपरि ॥ पंचा-
मृतं पंचगव्यं पंचरत्नं समन्वितं ॥ ४१ ॥

अर्थ:- आणि वस्त्रपुष्पे इहां करून तो कलश अलंकृत करून तांदुळावर स्थापन करावा. त्या घटाचे ठावीं पंचा-मृत, पंचगव्य, पंचरत्न ही घालावीं.

पंचत्वक् पंचपत्रं तु निक्षिप्याः सप्तमृत्तिकाः ॥

पूजयेत्लोकपालांस्तु गंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥ सं

पूज्यविधिवद्भक्त्या तत्तन्मंत्रैः श्रमं ब्रवीत् ॥ ४२

अर्थ:- पांच साली, पांच पत्री, आणि सप्तमृत्तिका राकाच्या, मग गंध, पुष्प, अक्षतादिकें करून त्यांच्या त्यांच्या मंत्रांनीं भक्ति करून मंत्रज्ञ पुरुषानें लोकपालां जे इंद्रादिक

यांची पूजा करावी. ४२

अग्निसंस्थापनं कुर्यात्थोमकर्मसमारभेत् ॥ मृ-
त्यंजयेति मंत्रेण समिद्धिः स्वादिरैः शतमैः ॥ ४३

अर्थ:- नंतर अग्निस्थापन करावे मग मृत्यंजयाच्या मं-
त्रें करून आणि चांगल्या रेंवेराच्या समिधानीं अग्नीविठा-
यीं होम करावयास आरंभ करावा. ४३

तिलैर्व्याहृतिभिर्होममष्टोत्तरसहस्रं ॥ अ-
थवाष्टोत्तरशतं कुर्यात्सम्यक् समाहितः ॥ ४४

अर्थ:- आणखीं एकाग्रचित्त होऊन व व्याहृती म्हणून
अष्टोत्तरसहस्र अथवा अष्टोत्तरशत तिलांचा होम क-
रावा. ४४

अभिषेकं ततः कुर्यात्तदुक्तं द्विजसत्तमैः ॥ पुण्यै-
र्वारुणसूक्तैर्वाशांतिसूक्तैस्तथैव च ॥ ४५ ॥

अर्थ:- होम समाप्त झाल्यावर पुण्यकारक वरुणसूक्तें
व शांतिसूक्तें इहीं करून ब्राम्हणांनीं यजमानाच्या म-
स्तकावर अभिषेक करावा. ४५.

एवं सम्यग्बिधानेन शांतिकर्म करोति यः ॥ त-
स्यायुः श्रीर्जयो वृद्धिर्यशो रोगश्च जायते ॥

अर्थ- अशा चांगल्या विधानें करून जो शांतिकर्माचें अचरण करितो त्याला आयुष्य, श्री, जय, वृद्धि, यश, आरोग्य हीं प्राप्त होतात. ४६.

पल्लीसरठयोः शांतिविधानं शौनकोदितं ॥ यः
समारभते तस्य निर्विघ्नं जायते ध्रुवं ॥ ४७ ॥

अर्थ- पाल व सरडा यांच्या शांतीचें विधान शौनक ऋषींनीं सांगितलें आहे. त्या प्रमाणें जो आरंभ करितो त्याला विघ्नाची पीडा होत नाही. ४७ ॥ ७९ ॥

इति पल्लीसरठयोः शांति समाप्ता ॥

आतांस्त्री लक्षणे सांगतो.

अथ स्त्रीणां विशेषेण फलं पत्न्याः प्रपातने।

तत्तत्स्थान विशेषेण ज्ञातव्यं सविचक्षणैः ॥१॥

अर्थ :- यानंतर स्त्रियांच्या त्या त्या स्थानीं पाल पडली असतां विशेषें करून फळ सांगतो तें कुशल पुरुषांनीं

जाणावें. १

शिरसि श्रियमाप्नोति ब्रम्हस्थाने मृतिप्रदा

॥ केशबंधे रोगबंधः केशांते मरणं भवेत् ॥२॥

अर्थ :- स्त्रियांच्या मस्तकावर पाल पडली असतां लक्ष्मी प्राप्त होईल. आणि टाळूवर पडली असतां मृत्यु देणारी जाणावी. वेणीवर पडली असतां रोग माप्ति आणि केशांच्या अग्रावर पडलीतर मरण प्राप्ती असें जाणावें २

प्रीवायां कलहो नित्यं ललाटे च धनक्षयः ॥

दक्षे कपोले विधवा कश्चेत्प्रियदर्शनं ॥३॥

अर्थ :- मानेवर पडली असतां नित्य कलह होतो. कपालावर पडली असतां द्रव्य नाश होतो. आणि उजव्या गालावर पडली असतां विधवा होईल. डाव्या गालावर पडली असतां आपल्या प्रिय मित्राचें दर्शन होईल असें जाणावें. ३.

! दीर्घायुर्दक्षिणे कर्णे वामे स्वर्णविभूषणं ॥ द-
क्षिणे नयने दुःखं वामे वल्लभादर्शनं ॥ ४ ॥

अर्थ:- उजव्या कानावर पडली असता दीर्घ आयुष्य अ-
सें जाणावें. डाव्या कानावर पडली असतां सुवर्णालंकार
मिळेल, उजव्या नेत्रावर पडली असतां दुःख आणि डा-
व्या नेत्रावर पडली तर पतीचे दर्शन होईल. ४.

नासायां रोगसंप्राप्ती रूद्धोष्ठे कलहो भवेत् ॥

अधरोष्ठे धनैश्चर्यं संपुटे निधनं भवेत् ॥ ५ ॥

अर्थ:- नाकावर पडली असतां रोग प्राप्ती जाणावी. वर-
च्या ओंठावर पडली असतां कलह होईल. खालच्या ओं-
ठावर पडली असतां धन ऐश्वर्याची प्राप्ती होईल. ओ-
ष्ठ संपुटावर पडली तर नाश होतो. ५.

चुबुके विग्रहः प्रोक्तो वत्से मिष्टान्नभोजनं ॥

कंठे विभूषणं प्रोक्तं कक्षयोः सुखसंपदः ६

अर्थ:- चुबुक (म्हणजे खालच्या, ओंठा खालच्या हनु-
वटीचे वरचा जो भाग तो) यावर जर पाल पडली तर क-
लह होईल. आणि तोंडात जर पडली तर मिष्टान्नाचें भोज-
न मिळेल. कंठावर पडली असतां अलंकार प्राप्त हो-
तील. दोन्ही कंठवेबर पडली तर संपत्ति प्राप्त होईल. ६

पृष्ठे बंधुवियोगः स्यात्पार्श्वयोर्बंधुदर्शनं ॥ स्कुं-
धयोः स्त्रीस्फुरवांवाप्तिर्वाद्धोर्मणि विभूषणं ७

अर्थः- स्त्रियांच्या पाठीवर पडली असतां बंधूचा वियोग होईल. आणि दोन्ही कुशींवर पडली तर बंधूची भेट होईल. दोहोखांद्यावर पडली असतां आपल्यास स्फुरव प्राप्ती होईल. दडावर पडली असतां मणियुक्त अलंकार प्राप्ती जाणावी. ७

अर्थहानिः करे प्रोक्ता वामे लाभो भवत्स्वरं ॥

दक्षिणे मणिबंधे च मनस्तापो धनक्षयः ॥ ८

अर्थः- उजव्या हातावर पडली असतां द्रव्यानाश जाणावा. डाव्या हातावर पडली असतां लाभ होईल. उजव्या मनगटावर पडली असतां मनाला संताप, द्रव्यनाश हो.

वामे विभूषणं प्राप्तं करमध्ये महत्स्वरं ॥ कर-

पृष्ठे करागुल्यां भूषणं हानि कृत्तरे ॥ ९ ॥

अर्थः- डाव्या मनगटावर पाल पडली तर अलंकार प्राप्ति होते. दोन्ही हातांच्या मध्यभागी जर पडली तर महत्स्वरं. त्याप्रमाणेच उभय हस्तांच्या पृष्ठ भागी किंवा बोटांवर पडली असतां अलंकार प्राप्ती होईल. परंतु नखांवर पडली असतां नाश होतो. ९

स्तनयोर्बहु दुःखं स्यात् हृदि सौख्यविवर्धनं॥

कुक्षौ सत्पुत्रलाभः स्यादुदरोद्वाहमंगलं॥१०

अर्थ- दोन्ही स्तनांवर पडली असतां बहुत दुःख होईल
हृदयाचे ठायीं पडली असतां सौख्य राधि होईल. कु-
क्षीचें ठायीं पडली असतां सत्पुत्राची प्राप्ती होईल आणि
कन्येच्या पोटावर पडली असतां लग्न होईल असें जा-
णावें. इतर स्त्रियांच्या पोटावर पडली असतां मंगल
स्थणजे कांहीं लाभ होईल. १०

नाभौ सत्कीर्तिबुद्धिः स्याद्गुह्यस्थाने मृतिर्भ-

वेत्॥ कट्यांच वस्त्रलाभः स्याद्गुदे रोगसमु-

द्रवः॥ ११॥ ११ ॥

अर्थ- नाभ्यांच्या नाभीवर पडली असतां सत्कीर्तीची
बुद्धी होईल. गुह्यस्थानी पडली असतां मरण प्राप्ती
जाणावी. कंबरेवर पडली असतां वस्त्रांचा लाभ हो-
ईल. गुदस्थानी पडली असतां रोगाचा उद्भव होईल. ११

ऊर्वोरपत्यसंप्राप्तिर्जान्बन्धनमेव च॥ जंघ-

योरर्थहानिः स्यात् गुल्फयोर्मरणं ध्रुवं॥ १२॥

अर्थ- दोन्ही मांड्यावर पाल पडली असतां कन्या
किंवा पुत्र होईल. उभय गुडघ्यांवर पडली असतां

बंधनप्राप्ती आणि जंघावर म्हणजे गुडच्या पासूच्या-
पर्यंत पतन पावली असतां द्रव्याचा नाश होतो. आणि उभय-
दयांवर पडली असतां मरणप्राप्ती होईल. असें जाणावें. १२

दक्षिणे-चरणेयानं वामेशत्रुविनाशनं ॥ अंगु-
लीष्वात्मजाः कोशो धान्यलाभो नरवेषु च ॥ १३

अर्थ- उजव्या पायावर पाल पडली असतां गांवांस जा-
णें होईल. डाव्या पायावर पडली असतां शत्रूचा नाश हो-
ईल. पायांच्या बोटांवर पडल्यास पुष्कळ द्रव्य
प्राप्ती होईल. आणि पायांच्या नखांवर पाल पतन पाव-
ली तर धान्यप्राप्ती असें जाणावें १३.

इति पल्लीसरदयोः पतनाद्रोहणादपि ॥ स्त्री-
णां ज्ञेयं विशेषेण यदुक्तं मुनिपुंगवैः ॥ १४ ॥

अर्थ- याप्रकारें करून पातीच्या पडण्याचे व सरदक-
टण्याचे फळविशेषें करून अरबींनीं स्त्रियांस सांगित-
लें आहे तें जाणावें. १४.

अथ दिशाफलं ॥

पूर्वायांचिं नितं कार्यमाग्नेय्यामग्निजंभयं ॥ या-
म्यंतु मरणं विद्यात् नैर्ऋत्यां कलहो भवेत् ॥ १

अर्थ- आतां आपल्या आंगावर पाल पडल्यावर तीजर

१ सोमे बुधे गुरो शक्रे धनलाभ प्रजायते ॥ भा-
नो भौमे तथा मंदे धनहानिः प्रजायते ॥ १ ॥

अर्थ:- आतां वारांचे फळ सांगलों. सोमवार, बुधवार, गुरुवार, शक्रवार ह्या दिवशीं जर पाल पडली तर धनलाभ होतो, आदित्यवार, मंगळवार, शनिवार इतक्या दिवशीं पडली असतां द्रव्य नाश होतो. १

अथ नक्षत्रफलं.

अश्विन्या माथुरा रोग्यं भरण्यां रोग एव च ॥

कृत्तिका धनहानिस्त्यात् ब्राह्मे चांद्रे च संपदः १

अर्थ:- आतां नक्षत्र फळ सांगतो. अश्विनीवर पाल पडली असतां आयुष्य आणि आरोग्य हीं प्राप्त होतात. मरणीवर पडली असतां रोग प्राप्ति जाणावी. कृत्तिकांवर पडलीतर धनहानि जाणावी. रोहिणी आणि मृग चांदर पडली असतां संपत्ति शक्य होईल. असें जाणावें. १

आर्द्रायांच भवेन्मृत्युर्धनलाभः पुनर्व-

सौ ॥ पुष्ये चैव भवेत्लाभः सार्वे च मरणं

ध्रुवम् ॥ २ ॥

अर्थ:- आर्द्रावर पडली असतां मृत्युप्राप्ती होईल पुनर्वसूवर पडली असतां धनलाभ होईल. पुष्यनक्ष-

घावर पडली असतां लाभ होईल. आदेलवावर ऋड-
ली तर निश्चयेकरून मरण जाणावें. २

मघाक्षेमकरीप्रोक्ता पूर्वांश रोगसंपदः ॥३॥

तरादिचतुष्केषु वरुणं भवति निश्चितं ॥३॥

अर्थ:- मघानक्षत्रावर पाल पडली असतां कल्याण
प्राप्ति होणे. पूर्वा नक्षत्रावर पडली असता रोगाधिक्य
जाणावें. उत्तरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, व्याच्छार नक्षत्रां-
वर पाल पडली असतां निश्चये करून शुभ जाणा-
वें. ३॥

विशारवा धननाशाय मैत्रेराज्यं विनिर्दिशेत् ॥

ज्येष्ठायां निधनं प्रोक्तं मूले चैव सरवागमः ॥४॥

अर्थ:- विशारवावर पाल पडली असतां धननाश जाणा-
वा. अनुराधावर पाल पडली असतां राज्य प्राप्ती जाणा-
वी. ज्येष्ठांवर पाल पडली असतां नाश जाणावा. मूला-
वर पाल पडली असतां सरव प्राप्ती जाणावी. ॥४॥

पूर्वाषाढा मृत्युवे स्यादुत्तराक्षेमकारि-
णी ॥ श्रवणे राज्यसंप्राप्तिर्धनिष्ठायां

धनक्षयः ॥५॥

अर्थ:- पूर्वाषाढावर पाल पडली असतां मृत्यु प्राप्ती जा.

पौष्णी. उत्तराषाढावर पाल पडली असतां कल्याण प्राप्ती जाणावी. श्रवणावर पाल पडली असतां राज्य प्राप्ती. धनिष्ठावर पाल पडली असतां धन नाश जाणावा. ७.

शानतारासूचसूरवं पूर्वभाद्रपदाशमा॥

शमोनराभाद्रपदावेकनाराज्यदायिनी॥

॥ ३॥

अर्थ:- शानताराकावर पाल पडली असतां सूरव प्राप्ती जाणावी. पूर्व भाद्रपदावर पाल पडली असतां शम जाणावे, उत्तरा भाद्रपदावर पडली असतां शुभ. रेवती नक्षत्रावर पाल पडली असतां राज्य प्राप्ती जाणावी. ॥ ४ ॥

वी. ॥ ४ ॥

अथलग्नफलम्

मेषे वृषे च लाभः स्था. मिथुने स्था. च कन्यका ॥ कर्के वृद्धिः सतः सिंहं कन्या लग्ने ध-

न क्षयः ॥ १ ॥

अर्थ:- बारा लग्नांवर पाल पडली असतां काय फल साहे ते सांगतो. मेष, वृषभ, या लग्नांवर पाल पडली असतां लाभ जाणावा. मिथुन लग्नावर पाल

पडली असतां कन्या होईल. कर्क लमावर पाल
पडली ममतां भाणना उत्कर्ष होईल. असं जाणावें.
सिंह लमावर पाल पडली असतां पुत्रमाप्ती क-
न्या लमावर पाल पडली असतां द्रव्यनाश जाणावा.१

तूलादशिकयो वस्त्रं धनुर्मेकर योधनम्॥

महाहानिः कुंभलक्ष्मे मीने संतापकारिणीं

॥२॥

अर्थ:- तूळ, दशिक, चालमांवर पाल पडली अ-
सतां वस्त्रमाप्ती. धन, मेकर, यांवर पडली असतां
धन माप्ती जाणावी. कुंभ लमावर पडली असतां मो-
ठी हानी होईल. मीन लमावर संताप माप्ती जा-
णावी. ॥२॥

अथ योगफलं

शूलवज्रव्यतीपाते व्याघाते परिधेतथा,
वैधृत्यां घातमित्यादुरन्ये योगाः शक्ता-
वहाः॥१॥

अर्थ:- आतां योगार्थें फळ सांगतां. शूल, वज्र, व्य-
तीपात, व्याघात, परिध, वैधृती, या योगांवर पाल प-
डली असतां नाश होईल आणि या शिवाय जे योग

त्यांवर पडली तर शतभ जाणावी.१॥

अथ करणफलं.

नागेचतुःष्यदेशोको भद्रायां मरणं क्वं ॥

शेषाणि शतभदानि स्थुः करणानि सदैव-
हि ॥१॥

अर्थ :- आतां करणफल संगतो, नाग, चतुष्याद
या करणांवर जर पाल पडली तर शोक कारक जा-
णावी. भद्रावर पडल्यास निश्चयें करून मरण जा-
णावें. याशिवाय दुसऱ्या करणावर पाल प तांशम-
सतां शतभदायक जाणावी. १

इति पल्ली सररयोः फलकारिका

समाप्ता

